

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, खंडवा रोड, इन्दौर-452001

फ़ाइल क्रमांक. प्रेस नोट/प्रेस व पब्लिसिटी/2022/37

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, द्वारा NABI एवं CIAB संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित

अनुसंधान संस्थानों के शोध के आधार पर सोयाबीन की माध्यमिक कृषि में भी अपार संभावनाएं हैं। उत्पादन में अपने बड़े बुनियादी ढांचे के साथ आईसीएआर-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर ने पारस्परिक लाभ के लिए राष्ट्रीय कृषि-खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान (एनएबीआई) तथा नवोन्मेषी एवं अनुप्रयुक्त जैव-प्रसंस्करण केंद्र (सीआईएबी), मोहाली, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के साथ समझौता ज्ञापन करार किया। इस पहल के अंतर्गत प्रो अश्विनी पारीक, कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय कृषि-खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान (डीबीटी, भारत सरकार), मोहाली द्वारा 4 जुलाई 2022 को भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर का दौरा किया गया तथा संस्थान में हो रहे अनुसंधानों के संबंध में वैज्ञानिकों के साथ चर्चा की। भारत सरकार की पहल "आज़ादी का अमृत महोत्सव" के एक भाग के रूप में "सूखा और लवणता सहनशील फसलें उगाना: प्रकृति माँ से सबक सीखना" पर उनके द्वारा एक व्याख्यान दिया गया। इस भ्रमण पर उन्होंने संस्थान द्वारा संचालित कृषि-व्यवसाय केंद्र (एबीआई) का भी दौरा किया एवं सोयाबीन युक्त खाद्य पदार्थों की निर्माण प्रक्रियाओं को भी गहराई से जाना। कृषि अनुसंधानों के भविष्य के सन्दर्भ में चर्चा करते हुए संस्थानों द्वारा पारस्परिक रूप से एक दूसरे के साथ सहयोग करने हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का निर्णय लिया गया। इस सहयोग के लिए, डॉ नीता खांडेकर, कार्यवाहक निदेशक ने संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, डॉ एम.पी. शर्मा तथा डॉ एम.के. श्रीवास्तव के साथ राष्ट्रीय कृषि-खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान (एनएबीआई) तथा सेंटर ऑफ़ इनोवेटिव एंड एप्लाइड बायोप्रोसेसिंग (सीआईएबी), मोहाली का दौरा किया। इसके अंतर्गत 19 जुलाई 2022 को दोनों संस्थानों के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षरित हुआ। इस परिकल्पित सहयोग करार के मुख्य क्षेत्र- सोयाबीन सुधार के लिए क्रिस्पर कैस जीनोम एडिटिंग

टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आईआईएसआर वैज्ञानिकों का प्रशिक्षण, जैव उर्वरक फॉर्मूलेशन में सूक्ष्म जीवों का पता लगाने और मात्रा का पता लगाने के लिए सेंसर आधारित तकनीक का विकास, हाइड्रोजेल में बैक्टीरिया का एनकैप्सुलेशन और सेंसर आधारित तकनीक का उपयोग करके इसकी प्रभावकारिता और स्थिरता के लक्षण का वर्णन तथा सोयाबीन उत्पादन के लिए जैव-उत्तेजक के रूप में ट्राईकॉन्टानॉल का अलगाव और लक्षण का वर्णन एवं हाल ही में जारी सोयाबीन की विभिन्न किस्मों में कुनिट्रूज़ ट्रिप्सिन अवरोधक का आकलन तथा इसके शेल्फ जीवन और भंडारण के लिए सोयाबीन खाद्य उत्पादों के लक्षण का वर्णन। इसी क्रम में निदेशक महोदया ने कहा, इस तरह के सहयोग से देश में सोयाबीन के उपयोग के नए रास्ते खुलेंगे और इस पहल के साथ हम स्वर्णिम भारत के निर्माण की दिशा में कदम रख चुके हैं।

.....





